पाठ 11

# गो संरक्षण से ग्राम विकास

अपने ऋषि–मुनियों ने गहन चिंतन के बाद यह उद्‌घोष किया है – ''गावो विश्वस्य मातरः''। भारतवर्ष में सदियों से 'गाय' धन और धान्य की दात्री अर्थात् एक उपयोगी पशु मात्र ही नहीं वरन् यहाँ के लोग उसे पवित्र और पूज्य मानकर अत्यंत आस्था का भाव रखते हैं। गोधन के प्रति आदर भाव हमारी पुरातन संस्कृति का अटूट हिस्सा रहा है। द्‌वापर काल में गोपाल नाम से विख्यात यदुकुल तिलक श्री कृष्ण स्वयं ग्वाला बनकर गोसेवा करते दृष्टिगोचर होते हैं, तो मध्य काल में हमें अकबर के राज्य काल में गोरक्षा की बहुत अच्छी व्यवस्था के उल्लेख दिखाई देते हैं।

भारतीय जन जीवन में गाय का अपना विशेष महत्त्व है। गाय चौपाया प्राणी है और उसे माँ के बराबर आदर दिया गया है। यह हमारी पारिवारिक व कृषि संस्कृति की आधार रही है। गाय को गोधन कहा है। पौराणिक काल में जिसके पास जितनी अधिक गायें, वह उतना ही धनी माना जाता था। अतएव गायों की सुरक्षा को एक मानवीय कर्तव्य के रूप में परिभाषित किया गया है। गाय को वेदों में रक्षणीय, सुरक्षा के योग्य इसी अर्थ में स्वीकारा गया है कि वे सर्वोपरि धन है। गायों के जाये बैलों ने कृषि कार्य में इतना सहयोग किया कि वे गायों के साथ ही पूजा के योग्य भी माने गए।

मौर्य सम्राट अशोक ने अपने स्तंभों पर सिंह और अश्व के साथ ही बैलों का अंकन भी करवाया, यह बैल की शक्ति के महत्त्व का परिचायक है। बैल को बलीवर्द और वृषभ भी कहा जाता है और वह शिव भगवान की सवारी है।

भारत में गोसेवा की अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं।

गोधन के महत्त्व को स्वीकार कर श्री कृष्ण ने लोगों को इसके पालन–पोषण की सीख दी। महाराजा दिलीप ने जीवन में गोसेवा को महत्त्व दिया। उन्होंने 'नंदिनी' गाय की सेवा से जीवन को सार्थक किया। ऋषि वशिष्ठ द्‌वारा कामधेनु गाय की रक्षा की कहानी रामायण में आई है और पांडवों द्‌वारा गायों की सेवा का प्रसंग महाभारत में विस्तार से मिलता है।

गोधन के संरक्षण में मुगल शासक अकबर ने भी रुचि ली। 'आइने–ए–अकबरी' में

लिखा है कि उस काल में गायें प्रायः 20 सेर दूध देती थी और बैल 24 घंटे में 120 मील तक की दूरी तय कर सकते थे। अकबर ने गायों से भरे पूरे ब्रज और अन्य क्षेत्रों में चारागाह की व्यवस्था करवाई थी। इससे पूर्व भी गायों के चरने के लिए गाँव–गाँव में चारागाह भूमि रखी जाने की परंपरा रही है।

'घर–घर गाय और गाँव–गाँव गोठां' की मान्यता के मूल में यह विचार रहा है कि गायें प्रत्येक घर में हो और प्रत्येक गाँव में गोशाला और गोष्ठ हों। शास्त्रों में गोशाला के निर्माण को पुण्य कार्य कहा गया है। इसका सीधा संबंध हमारे नीरोगी जीवन से रहा है। ऋषियों ने बहुत पहले जान लिया था कि गोधन हमें सुख, समृद्धि और स्वास्थ्य दे सकता है। वैज्ञानिकों ने गायों पर जो अनुसंधान किए हैं, वे बताते हैं कि मानव जीवन के साथ गायों का संबंध परस्पर पोषण का हेतु है। गाय से प्राप्त द्रव्य 'पंचगव्य' के नाम से जाने जाते हैं। आचार्यों ने पंचगव्य से संचित विष के नष्ट होने का विचार दिया है। पेट के कीड़े, हृदय रोग, जलोदर, कैंसर, बवासीर के रोगी गोमूत्र से ठीक हुए हैं। गाय के गोबर में सोलह तत्व पाए जाते हैं और गोमूत्र में चौबीस। गोमूत्र असाध्य रोगों के उपचार में भी उपयोगी है।

सामान्यतः एक अच्छी गाय रोजाना 10 से लेकर 15 लीटर दूध देती है। गाय के दूध में भी लगभग वे सारे गुण होते हैं जो माँ के दूध में होते हैं। कई मिठाइयाँ गाय के दूध से बनती हैं। दही और छाछ भी उसी से मिलते हैं। गाय के घी का महत्त्व आयुर्वेद में तो विशेष है ही, अग्निहोत्र पर शोध करने वालों ने भी इसे महत्त्वपूर्ण माना है। पर्यावरण की शुद्धि की क्षमता गाय के घी से हवन करने में है। यह ओजोन परत के छेद को पाटने में भी उपयोगी है।

आज भी गाय हमारी अर्थव्यवस्था का आधार सिद्ध हो सकती है। गोपालन से परिवार का भरण–पोषण का अधिकांश गुजारा गोधन से प्राप्त दूध, दही, छाछ, घी जैसे पोषक पदार्थों से हो जाता है। खेती में सहायक बैल सामान ढोने में सहायक बन, महँगे पेट्रोलियम पदार्थों से मुक्त ग्रामीण पर्यावरण में संतुलन भी बनाते हैं। गोधन का गोबर ईंधन बचाने व ऊर्जा उत्पादन कर आत्मनिर्भरता को मजबूत बनाता है। गोपालक की दिनचर्या अनुशासन के धागे में ऐसी पिरोयी जाती है कि वह स्वस्थ जीवन को संबलन प्रदान करती है। गोमय और उससे प्राप्त मिथेन गैस का उपयोग भोजन बनाने में हो सकता है।

गाय की रक्षा का अर्थ हमारी अर्थव्यवस्था को बचाना है। गाँधीजी ने इसीलिए कहा था–''गाय बचेगी तो मनुष्य बचेगा, वह नष्ट हुई तो उसके साथ हम सभी यानी प्रकृति, पशु–पक्षी, पर्यावरण, हमारी सभ्यता भी नष्ट हो जाएगी।''

भारतीय गायों में जो गुण पाए जाते हैं, वे विदेशी प्रजाति की गायों में नहीं मिलते। क्योंकि भारतीय गायें स्थानीय एवं भौगोलिक परिस्थितियों से अनुकूलन स्थापित करने में सक्षम होती है। भारतीय गायों में गीर, साहीवाल, थारपारकर, राठी, हरियाणवी आदि नस्लें मुख्य हैं। गुजरात में अनेक जगहों पर 30 लीटर दूध देने वाली भारतीय गायें हैं। इजराइल देश ने गीर नस्ल की गाय से 120 लीटर दूध रोजाना उत्पादन करके दुनिया को बता दिया है कि भारतीय गाय दूध देने की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हैं। सामान्यतः देशी गायें हरी घास और उत्तम पोषण आहार मिलने पर 10 से 25 लीटर तक दूध प्रतिदिन दे सकती हैं। भारतीय जन जीवन में गाय के प्रति श्रद्धा का भाव, उसके पौराणिक महत्त्व एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मजबूत आधार होने से वर्तमान समय में गाय का संरक्षण एवं संवर्धन आज की महती आवश्यकता है।

## हमें पालती है गाय

प्रायः यह कहा जाता है कि गाय हम पालते हैं जबकि सच ये है कि गाय हमें पालती हैं। हमारे देश को कृषि के लिए अधिकांश ऊर्जा आज भी गोवंश से मिल रही है। देश में जितना दूध पैदा होता है, उसका अधिकांश गायों से मिलता है।

कार्बोहाइड्रेड, वसा, अल्बुमिनाइड, क्षार तथा विटामिन होने के कारण गाय का दूध प्रौढ़ और बालकों के लिए संपूर्ण आहार है। गाय के घी से होने वाले हवन का धुआँ जहाँ–जहाँ फैलता है, वहाँ कीटाणु अथवा बैक्टीरिया नहीं रहते हैं। रूस में एक अध्ययन से यह सिद्ध हुआ है।

गाय के दूध में क्या कितना?

- प्रोटीन्स – 4.0 प्रतिशत
- कार्बोहाइड्रेट्स – 4.0 प्रतिशत
- ऊर्जा (कैलोरी) – 6.5 प्रतिशत
- पानी – 87.3 प्रतिशत
- वसा – 4.0 प्रतिशत
- खनिज (मिनरल्स) – 0.7 प्रतिशत

### शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| पुरातन | – | बहुत पुराना | दृष्टिगोचर | – | दिखाई देना |
| चौपाया | – | चार पैरों वाला | विनिमय | – | लेन–देन |
| रक्षणीय | – | जिसकी रक्षा की जाए | सर्वोपरि | – | सबसे ऊपर |
| चरनोट | – | चरने का स्थान, चारागाह | बवासीर | – | मस्सा, अर्श (एक बीमारी का नाम) |
| जलोदर | – | जल की अधिकता से होने वाले रोग | | | |

## अभ्यास कार्य

### पाठ से

#### सोचें और बताएँ

1. भगवान कृष्ण को 'गोपाल' क्यों कहा जाता है?
2. गो संरक्षण के बारे में 'आइने–ए–अकबरी' में क्या लिखा है?
3. 'हमें गाय पालती है', कैसे?
4. भारतीय गायों की नस्लों के नाम बताइए।

#### लिखें

#### बहुविकल्पी प्रश्न

1. ''गावो विश्वस्य मातरः'' गाय के लिए ये शब्द कहे हैं–

   (क) सम्राट अशोक ने (ख) मुगल शासक अकबर ने

   (ग) ऋषि–मुनियों ने (घ) राजा दिलीप ने ( )

#### अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. हमारी पारिवारिक एवं कृषि संस्कृति का आधार किसे माना है?
2. वेदों में गाय को किस अर्थ में स्वीकारा गया है?
3. राजा दिलीप ने किस गाय की सेवा की?
4. ऋषि वशिष्ठ ने किस गाय की रक्षा की थी?

#### लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सम्राट अशोक ने अपने स्तंभों पर क्या–क्या अंकन करवाया?
2. गाय से प्राप्त द्रव्य 'पंचगव्य' के नाम से जाने जाते हैं। उनके नाम लिखिए।
3. गोमूत्र के औषधीय उपयोग से ठीक होने वाले रोगों के नाम लिखिए।

#### दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. गाय को ग्राम विकास का आधार माना गया है, क्यों? अपने विचार लिखिए।
2. गाय पर एक विस्तृत निबंध लिखिए।

### भाषा की बात

1. गोमूत्र असाध्य रोगों के उपचार में भी उपयोगी है।
   जिसके पास जितनी अधिक गायें, वह उतना ही अधिक धनी माना जाता था।
   रेखांकित शब्दों से वाक्य के अर्थ में विशेष परिवर्तन हुआ है। ऐसे शब्दों को (ही, भी, तक)निपात कहा जाता है। ये अव्यय होते हैं। निपातों का स्वतंत्र अर्थ नहीं होता है। आप भी पाठ में से निपात वाले वाक्यों को छाँटकर लिखिए।
2. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम शब्दों को रेखांकित कीजिए तथा उनके सही भेद पर सही का निशान लगाइए–
   (क) वे गायों के साथ ही पूजा के योग्य भी माने गए हैं। (पुरुषवाचक / संबंधवाचक)

(ख) यह हमारी पारिवारिक व कृषि संस्कृति का आधार रही है। (पुरुषवाचक / संबंधवाचक)

(ग) गाय चौपाया प्राणी है और उसे माँ के बराबर आदर दिया गया है। (पुरुषवाचक / संबंधवाचक)

(घ) वह चरकर अपने आप घर आ जाती है। (पुरुषवाचक / निजवाचक)

3. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए–

गौ, प्रतिदिन, संस्कृति, हृदय, मिठाई, सिंह, ऋषि, वशिष्ठ, ग्रामीण

## पाठ से आगे

गाँधीजी ने कहा था ''गाय बचेगी तो मनुष्य बचेगा।'' इस कथन पर अपना मत प्रकट कीजिए।

### मन की बात

1. महाराजा दिलीप एवं नंदिनी से संबंधित अंतर्कथा शिक्षक जी से जानकर प्रार्थना सभा एवं बालसभा में सुनाइए।
2. इस पाठ में गाय के बारे में विस्तृत जानकारी है। आप अपनी पसंद के किसी एक चौपाया जानवर के बारे में विस्तृत जानकारी कर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

### चर्चा करें

हमने पाठ में गाय आधारित ग्राम विकास को जाना है, ग्राम विकास में गाय के साथ और कौन–कौन से आधार है? चर्चा कीजिए।

### तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

श्रद्धा, सिद्ध, सम्बन्ध, समृद्धि, पाण्डव

### जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''कर्म कौशल, कर्म करने से आता है।''

केवल पढ़ने के लिए

# हार नहीं होती

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है।
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

डुबकियाँ सिन्धु में गोताखोर लगाता है।
जा–जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।।
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में।
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो।
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।।
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम।
संघर्षों का मैदान छोड़, मत भागो तुम।।
कुछ किए बिना ही जय–जय कार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

**हरिवंश राय बच्चन**